ISBN 978-93-82504-11-5

अल्पसंख्यकों का विचार विश्व

संपादक

डॉ. शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख़

प्रबंध संपादक

डॉ. लियाकत शेख़ डॉ. दस्तगीर देशमुख

नासिरा शर्माजी के इमामसाहब काहानी में अल्पसंख्यंक अभिव्यक्ति

डॉ.राजश्री भामरे 113

हिंदी साहित्य में दलित विमर्श

प्रा.डॉ. मनीषा जाधव 118

हिन्दी साहित्य में नारी विमर्श : उपन्यास के संदर्भ में

उमा सन्होत्रा 120

संत रविदास का दलित विमर्श

भगोरे पुंजाराम रुपचंद 123

भारतीय मुस्लिमों का हिंदी फिल्मों में योगदान

डॉ. सुजाता राजेंद्र लामखडे 126

अल्पसंख्याकों का भारतीय राजनीति में योगदान

घोरपडे पद्‌माकर पांडुरंग 128

संजीव ठकूर कृत 'धार' की मैना अमर चरित्र

प्रा.डॉ.रमाकांत आपरे 132

समकालीन कवियित्रियों की कविताओं में प्रतिबिंबित नारी विमर्श

डॉ. सुश्री भारती विजयराव शेळके 135

अल्मा कबुतरी में दलित विमर्श

प्रा.राणी जगन्नाथराव जाधव (गायकवाड) 137

मधूकर सिंह के उपन्यासों मे नारी

कु. माधुरी परमेश्वर सोनटक्के डॉ. अशोक मर्डे 140

'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास मे मुस्लिम समाज की स्त्री

डॉ. सविता किर्ते 143

मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में स्त्री-विमर्श

प्रा.विश्रांती तारे 146

हिंदी साहित्य में दलित विमर्श

प्रा.तुपे प्रविण तुळशिराम 150

ISBN 978-93-825(

अल्मा कबुतरी में दलित विमर्श

प्रा.राणी जगन्नाथराव जाधव गायकवाड

हिन्दी साहित्य में कितने लेखक आए । अपने साहित्य के माध्यम से सामाजिक उत्थान की बाते करते है । बीसवी सदी के उत्तरार्थ के हिन्दी उपन्यासों में महिलाओं एवं दलितों की चेतना वृत्ति को प्रश्रय देनेवाले उपन्यासों का सृजन हुआ । एसे ही प्रश्नों को लेकर लिखने वाली सशक्त लेखिका मैत्रयी पुष्पा है । इन्होंने महिला जीवन की नाना प्रकार की समस्याओं को प्रतिपादित करने का कार्य किया है । मैत्रयी पुष्पा के समग्र साहित्य में नारी जीवन के दु:ख यातना पीडा और घुटन का विषय रहा है । इस प्रकार मैत्रयी पुष्पा नारी विमर्श तथा दलित विमर्श के क्षेत्र में सशक्त लेखिका के रूप में उभरी है ।[1]

मैत्रय पुष्पाजी का जन्म 30 नवम्बर 1944 को अलीगढ जिले के सिकुरी गाँव के एक ब्राम्हण परिवार में हुआ था । उनके माता का नाम कस्तुरीदेवी और पिता का नाम हरीलाल था । मैत्रयीजी के जन्म के पश्चात अठारह महीने में ही उनके पिताजी का देहान्त हो गया । अब उनके परिवार में केवल तीन लोक थे - मैत्रयजी, माँ कस्तुरीदेवी और उनके पैरों से अपाहिज दादाजी । उनकी माँ कस्तुरी देवी एक कर्मढ और इरादों की मजबूत महिला थी, पतिमृत्यू के बाद उन्होंने पढने - लिखने की ठानी और सरकारी नोकरी करके अपनी परिवार को चलाया । मैत्रयी पुष्पा की आरंभिक शिक्षा अलिगढ में हुई । उन्होने बुन्देलखण्ड कॉलेज झाँसी से बी.ए. और हिन्दी साहित्य मे एम.ए. की परीक्षा पास की । मैत्रयीजीने बचपन से लेकर युवावस्था तक अकेले ही अनेक परेशानियोंका सामना किया । इस प्रकार मैत्रयीजीने अनेक मुश्किलों का सामना करते हुए अपनी पहचान समाजलक्षी एवं साहित्य की देहरी पर बनायी ।[2]

मैत्रयीजीने 'चिन्हार', गोमा हँसती है ललमानियाँ तथा अन्य कहानियाँ आदी कहानी संग्रह का निर्माण किया है। उपन्यास साहित्य में 1) बेतवा बहती रही, 2) इदन्नमम् 3) चाक, 4) झुलानट, 5) अल्मा कबुतरी, 6) विजन, 7)कही इसुरी फाग, 8) त्रिया हठ आदी. ''कस्तुरी कुंडल बसै' आत्मकथा और स्त्री विमर्श पर लिखा 'खुली खिडकियाँ'[11] आदी साहित्यकृतीयों का निर्माण मैत्रयी पुष्पाजीने किया है ।

अल्मा कबुतरी' उपन्यास मे दलित विमर्श :-

इस उपन्यास की कथाभूमी के केन्द्र में बुन्देलखण्ड की विलुप्त होती आदिवासी कबुतरा जाति है । यह जाति अपने मूल निवास स्थान से विस्थापित है । वे अपने आप को रानी पद्मिनी, झलकारीबाई व राणा प्रताम की संताने कहते है । दर-ब-दर घुमते फिरते वे किसी के खेत में डेरे डाले बसते है । चोरी इन लेगों की जीविका का एकमात्र साधन है । मैत्रयी जी लिखती है - हमारे लिए वे ऐसे छापामार गुरिल्ले है जो हमारी असावधानियों की दरारों से झपट्टा मारकर वापस अपनी दुनिया मे जा छिपते है । कबुतरा पुरूष या तो जंगल में रहता है या जेल में ..... स्त्रीयाँ शराब की भट्टियों पर या हमारे बिस्तरों पर ..... ।[4]

प्रस्तुत उपन्यास में दो समाजों का जिक्र किया गया है । पहला आदिवासी कबुतरा समाज, दुसरा सभ्य समाज जिसे आदिवासी कबुतरा लोग अपनी भाषा में 'कज्जा' कहले है । उपन्यास का केन्द्रीय पात्र अल्मा है लेकिन कथा प्रारंम्भ होती है मंशाराम और कदमबाई से । मंशाराम कज्जा है जबकि कदमबाई आदिवासी कबुतरा नारी है । वे दोनो आपसी सम्बन्धो से बंधे है लेकिन उनका सम्बन्ध न होकर समाज की दो विपरित दिशाओं की टकराहट का परिणाम है । कबुतरा आदिवासी नारी कदमबाई की हार होती है जो मंशा के कुकर्मो का बदला नही ले पा रही है । मंशाराम उसके पति जंगलिया से चोरी करवाकर धोखे से पुलिस के हाथों मरवा देता है । उसी रात कदमबाई अपने पति जंगलिया से मिलने के लिए

ISBN 978-93-82504-11-5

पहुँचती है । कदमबाई अपने पतिसे मिलने के लिए जिस जगह पर पहुँचती अपने डेरे से थोडी दुर एक खेत में रात के वक्त पहुँचती है । कदमबाई अपने पतिसे मिलने के लिए जिस जगह पर पहुँचती है वहाँ कज्जा मंशाराम पहुँचकर धोखे से जंगलिया की भूमिका निभाता है । मैत्रयीजी लिखती है - "वादे के हिसाब से कोई पास आयी, वह छाया को देखते ही मदहोश हो गई । गदराई हुई गेंहूँ की बाले पेट की गुद-गुदा रही थी, गुन-गुनी कौन ने उसका बदन बाँध लिया । ...... देर तक वह तरंगो के साथ खेलती रही । धरती से आकाश तक झुलने पर सवार । ...... और उस रात ने उस फसल ने, उस प्यार ने कदम के गर्भ मे एक अंश बुंद बढने के लिए चोड दी ।"[5] यह गर्भ परिपक्व होकर 'राणा' के रूप में जन्म लेता है । वैसे तो कदमबाई चाहती तो अपने पेटमें पलरहे मंशा के गर्भ को रूखरी खाकर खेत में बहा सकती थी किन्तु कज्जा लोगों से टकराने और प्रतिशोध लेने हेतु राणा को जन्म देती है ।

गर्भ में बच्चा सधा रहा । न गिराया न गिरने दिया । हौल गर्दिश छातीपर झेलती रही पेटतक आने ही नहीं दी रेतगर्द में अँटी कदमबाई ने मुठ्ठी खोलकर देखी और मुस्कुरा पडी ।[6] किन्तु राणा में मंशाराम के लक्षण पैदा होने से कदमबाई का सपना अधुरा रह जाता है । उपन्यास में कदमबाई की चरित्र सृष्टी का उददेश केवल आदिवासी कबुतरा जाति के परिवेश को चित्रीत करना ही रहा है । पुलिसद्वारा उन पर लिए जाने वाले अत्याचार, प्रशासन का शोषण, कज्जा समाज का धिक्कार एवं घृणा, कज्जा समाज के प्रति आदिवासी कबुतरा जाति का रोष एवं प्रतिशोध लेने की भावना कबुतरा जाति की जीवन वृत्ति, चोरी, डकैती, छीना-झपटी आदि घटनाओं की भुक्त भोगी स्वयं कदमबाई रही है । कदम के चरित्र में मैत्रयीजी की सुक्ष्म नारी दृष्टी का परिचय प्राप्त होता है । कदम वह आग का तिनका है जो कज्जा लोगों के खिलाफ प्रतिशोध लेने हेतु लकडी के ढेर में रख दिया जाता है, आगे चलकर यह तिनका आल्मा के रूप में शोषकों के सामने भभक उठता है ।

आदिवासी कबुतरा जाति की औरतें सभ्य समाज (कज्जा समाज) से बदला लेने हेतु अपने आपको उन्हे लोगों के नीचे बिछाती रहती है जिसका उदाहरण उपन्यास की भुरीवाई है । वह बस्ती की पहिली माँ थी जिसने अपने बेटे रामसिंह को कुल्हाडी, डण्डा न थामकर पोथी, पाटी पकडाई । भुरीबाई उच्चवर्ग से टक्कर लेती है । पुलिस एवं उच्चवर्ग से प्रतिशोध लेने का उसका अपना अलग ढंग है । शरीर को बेचकर उससे प्राप्त आय से अपने बेटे रामसिंह को पढाती है । रामसिंह शिक्षा प्राप्त कर सभ्य समाज में रहने का प्रयास करता है किन्तु समाज स्वीकार नही करता । वह शिक्षीत होकर भी 'आदिवासा कबुतरा' नकर जीन को अभिशप्त है । पुलिस उसकी मजबूरियों का फायदा उठाकर उसे अपना दलाल बना लेती है । पुलिस के अमानवीय अत्याचारों को सहता रामसिंह अपनी नन्ही बेटी अल्मा को प्रतिशोध लेने हेतु तैयार करता है । लेकिन सभ्य समाज इस बात को भली भाँती जानता है कि कबुतराओं अपने खिलाफ प्रतिशोध की आग दिल दहला देनेवाली होती है । परिणाम स्वरूप इस आग को जलनेसे पहले बुझा देना चाहिए । रामसिंह का पात्र पुलिस केलिए खतरनाक बीमारी बन जाता है । वह पुलिस की नाक में दम कर के रख देता है । यही क्रान्तिकारी रामसिंह की बेटी आल्मा भी अपने अधिकारों के लिए लढना जन्मसिद्ध हक्क समझती है ।

अल्मा का पात्र आदिवासी, कबूतरा जाति के उत्कर्ष की परिधिमें है । वह पढेलिखे पिता की बेटी है । वह अपने पिता की परम्परा को निभाती अपने पिता रामसिंह की किसी-के द्वारा हत्या हो जाती है । पिता की हत्या के बाद आल्मा को दुर्जन कबुतरा के घर पहुँचाया जाता है । दुर्जन धन का लोभी होने के कारण अल्मा को कुछ रूपयों में सुरजभान के हाथों बेच देता है । सुरजभान के घर में बन्दी आल्मा का धीरज से परिचय होता है । धीरज के प्रयत्नोद्वारा बन्दी अल्मा सुरजभान की काल कोठरी से भाग निकलती है । वह भागती हुई विधानसभा के विधायक श्रीराम शास्त्री के घर पहुँचती है । वहाँ वे श्रीराम शास्त्री की रखेल बनकर अपना जीवन यापन करती है । पुष्पा लिखती है अल्मा न रो सकी न हँस सकी । अब तक वह मर्दों पर हमला करती रही है, जो उसकी इज्जत से खेले

 ISBN 978-93-82504-11-5

के मकसद से आए है ।[7] अल्मा अनेक प्रकार व अनेक लोगोंद्वारा शोषित व पीडीत होती है, किन्तु उसे सहन करने की शक्ति अभूतपूर्व है । यह बात केवल अल्मा को लागू नही होती किन्तु सभी आदिवासी कबुतरा नारियों को भी लागू होती है । दु:ख पर विजय प्राप्त करती अल्मा में आजादी की उम्मीदे मरती नही । लेकिन अल्मा आजाद नही हो सकती। उसकी दिनचर्या श्रीरामशास्त्री के हिसाब से चलती रही । श्रीरामशास्त्री की रखैल का रूप भी अल्मा के नसीब में ज्यादा दिन तक नही रहा । एक दिन मंदिर जीर्णोद्धार के समय श्रीरामशास्त्री की किसी के द्वारा गोली मारकर हत्या की जाती है। अल्मा समाज के सारे विधी विधानो के अनुसार श्रीरामशास्त्री की पत्नी के रूप में श्रीराम शास्त्री का क्रियाकर्म करती है और अन्त में अपने स्वर्गीय पति श्रीराम शास्त्री की रिक्त विधानसभा सीट की दावेदार बनती है ।[8].

निष्कर्ष :-

उपन्यास की कथा मुलत: फूटकर गाँव से राजधानी तक विस्तार नापती चरित्र कथा है । जिसमें पात्र बाहरी परिवेश के साथ अपने आप से भी जूझते है । कोई भी पात्र अपने वंछित तक नही पहुँचता । उपन्यास का अन्न और अल्मा का विधानसभा विधायक के रूप में प्रत्याशी बनना अल्मा के स्वप्नों का फल है । भारतीय आदिवासी समाज से जुडी बेडिटक्वीन फूलनदेवी कहाँ तक पहुँची थी । समय बदला है तो अब कंजर कबुतरों के हाथों में भी कुल्हाडी, डंडा की जगह पिस्तौलो, बन्दुको ने ले लि है । वे अब अपराध का समय काटने जंगल की ओर नही भागते महानगरों के होटलो में शरण लेते है । इस प्रकार मैत्रेयी पुष्पा का 'अल्मा कबुतरी' उपन्यास आदयन्त आदिवासी स्त्री विमर्श से ओतप्रोत है ।

संदर्भसूची :-

1) वसानी कृष्णावंती - दसवें दशक के हिन्दी उपन्यासों में दलित चेतना-जागृती प्रकाशन कानपुर 2010.पृ.सं.73
2) वही - पृ.सं.75
3) वही - पृ.सं.76
4) मैत्रेय पुष्पा, अल्मा कबुतरी - अंन्तिम पृष्ठ
5) वही - पृ.सं.22
6) वही - पृ.सं.28
7) वही - पृ.सं.358
8) वसानी कृष्णावंती - दसवें दशक के हिन्दी उपन्यासों में दलित चेतना-जागृती प्रकाशन कानपुर 2010.पृ.सं.185

श्रीमती - राणी जगन्नाथराव जाधव (गायकवाड)

सहाय्यक प्राध्यापक व विभाग प्रमुख, कला व विज्ञान महाविद्यालय,शिवाजीनगर,गढी. जि, बिड (महाराष्ट्र)